महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

अनुवादक के लिए रचना के सांस्कृतिक संदर्भ को समझना अनिवार्यः चंद्रा पांडेय

हिंदी विवि के कोलकाता केंद्र में काव्यानुवाद की समस्याएं पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

संगोष्ठी में बाएं से मृत्युंजय कुमार सिंह, चंद्रा पांडेय, कृपाशंकर चौबे और ओम भारती।

अनुवाद में एक बड़ी समस्या रचना के सांस्कृतिक संदर्भ को ठीक-ठीक समझने की होती है। यह कहना है सुपरिचित कवयित्री एवं अनुवादिका डा. चंद्रा पांडेय का। डा. पांडेय 12 जनवरी 2012 की शाम महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र में 'काव्यानुवाद की समस्याएं' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में अध्यक्षीय वक्तव्य दे रही थीं। इस संगोष्ठी का आयोजन नलिनी मोहन सान्याल के 150वें जन्म वर्ष के मौके पर किया गया था। सान्याल हिंदी के पहले एमए हैं और हिंदी व बांग्ला दोनों भाषाओं में उन्होंने कई किताबें लिखीं। उनकी याद में कोलकाता में पहली बार कोई कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में डा. चंद्रा पांडेय ने कहा कि हर रचना का एक सांस्कृतिक संदर्भ होता है, उसे समझे बगैर अनूदित रचना को नहीं समझा जा सकता। खंडवा से आए कवि प्रताप राव कदम ने अपने आलेख में कहा कि अनुवाद से ही एक भाषा दूसरी भाषा से, एक समाज दूसरे समाज से और एक देश दूसरे देश से जुडता है। कवि, अनुवादक और 'प्रगतिशील वसुधा' के संपादक राजेंद्र शर्मा ने कहा कि अनुवाद के जरिए ही समूचा सोवियत साहित्य पूरी दुनिया में और समूची दुनिया का साहित्य सोवियत भाषाओं में उपलब्ध हुआ था और उसे तत्कालीन सोवियत संघ की समाजवादी सरकार ने संभव किया था। वैसी भूमिका अब कहीं नहीं दिखती।भोपाल से आए

वरिष्ठ कवि और गद्यकार ओम भारती ने कहा किभारत में विदेशी साहित्य का जितना अनुवाद हुआ, उतना प्रतिवेशी साहित्य का नहीं हुआ।

जाने-माने गायक, कवि और अनुवादक मृत्युंजय कुमार सिंह ने कहा कि जिस भाषा में अनुवाद हो रहा है, उसके अनुरूप प्रतीकों, बिंबों और लोकोक्तियों का रूपांतरण करना अनुवादक के समक्ष एक बड़ी समस्या होती है। अनुवाद में यह देखना भी जरूरी होता है कि कथा वस्तु से जुड़े भाव उद्दीपन एवं भाव प्रसार का समुचित पालन हुआ है या नहीं।कवि-कथाकार अभिज्ञात ने कहा कि काव्य तत्व का ठीक-ठीक भाषांतरण अनुवादक के लिए सदैव एक कड़ी चुनौती रही है।बांग्ला साहित्यकार नवारुण भट्टाचार्य ने कहा कि अनुवाद में पहली समस्या तो चयन की ही होती है। चयन से ही अनुवादक की दृष्टि का पता चलता है। संगोष्ठी का संचालन महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कोलकाता केंद्र के प्रभारी डा. कृपाशंकर चौबे ने किया।

बी. एस. मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी